पाठ-11

जहाँगीर एवं शाहजहाँ

जहाँगीर एक न्यायप्रिय शासक था और अपने इस उत्तरदायित्व को ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य मानता था। वह सुशिक्षित, सुसभ्य एवं प्रजापालक था, उसने अपने पिता से प्राप्त साम्राज्य को सुरक्षित और सम्पन्न रखा।

जहाँगीर

जहाँगीर (1605-1627ई0)

जहाँगीर अकबर का पुत्र था। उसके बचपन का नाम सलीम था। अकबर के नवरत्न अब्दुर्रहीम खानखाना से सलीम ने तुर्की तथा फारसी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। अकबर की मृत्यु के बाद सलीम का राज्याभिषेक नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर के नाम से हुआ।

विद्रोह एवं दमन

गद्दी पर बैठते ही जहाँगीर को सर्वप्रथम अपने पुत्र खुसरो के विद्रोह का सामना करना पड़ा। जहाँगीर ने खुसरो को आगरे के किले में नजरबंद कर लिया किन्तु खुसरो कैद से

भागकर लाहौर पहुँचा। वहाँ उसने सिखों के पंचम गुरु अर्जुनदेव से अपनी सेना के लिए आर्थिक सहयोग लिया लेकिन खुसरो की सेना परास्त हो गयी। खुसरो की सहायता के कारण गुरु अर्जनदेव को मृत्युदण्ड दिया गया। सिख गुरु की फाँसी जहाँगीर के लिए नीति विरुद्ध कार्यवाही सिद्ध हुई, क्योंकि इससे सिखों का, जो तब तक एक शान्तिप्रिय समुदाय थे, मन खट्टा हो गया और वे साम्राज्य के शत्रुओं के रूप में परिवर्तित हो गये।

जहाँगीर की सबसे बड़ी सफलता मेवाड़ के राजपूतों की विजय थी। जहाँगीर ने मेवाड़ पर आक्रमण के लिए अपने पुत्र खुर्रम (शाहजहाँ) को भेजा। खुर्रम ने वहाँ के राणा अमरसिंह को संधि करने के लिए विवश किया। दक्षिण भारत में अहमद नगर पर जहाँगीर के पुत्र खुर्रम ने आक्रमण करके मुगल साम्राज्य का अंग बना लिया। इस उपलब्धि के कारण ही जहाँगीर ने खुर्रम को 'शाहजहाँ' की उपाधि प्रदान की। जहाँगीर ने अकबर की सुलहनीति का अनुसरण करके मेवाड़ को उदार शर्तें देकर राजपूतों की राजभक्ति प्राप्त कर ली जो औरंगजेब की अनीतियों के पहले तक मुग़ल साम्राज्य के प्रति बनी रही।

जहाँगीर ने कई शक्तिशाली सरदारों एवं राजपूतों को ऊँची पदवी दी जिससे उसका साम्राज्य सुदृढ़ हो।

जहाँगीर: एक व्यक्तित्व

जहाँगीर ने "सब लोगों के हृदयों पर विजय पाने" का प्रयत्न किया। उसने अपने विरोधियों को सामान्य रूप से क्षमादान कर दिया, बंदियों को मुक्त किया और न्याय की प्रसिद्ध जंजीर लगवायी जिसे कोई भी बजाकर सीधे बादशाह से फरियाद कर सकता था। उसने कई घोषणाएँ भी करवायीं जिससे उसके राज्य के लोगों में अच्छे आचरण की प्रवृत्ति का विकास हो।

जहाँगीर कला एवं साहित्य का प्रेमी था। वह स्वयं विद्वान था। उसने फारसी में 'तुजुके जहाँगीरी' नामक आत्मकथा लिखी। उसे उद्यान लगाने का भी शौक था। जहाँगीर चित्रकला का बड़ा कुशल पारखी था। वह एक ही चित्र में विभिन्न चित्रकारों द्वारा बनाये गये मुख, शरीर तथा पैरों को अलग-अलग पहचान सकता था।

जहाँगीर के शासन काल में पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक स्थिति मजबूत ही रखी। उसके काल में अंग्रेजों तथा मुग़लों के मध्य नवीन सम्बन्धों का विकास हुआ। जहाँगीर पुर्तगालियों और अंग्रेजों को नजरअंदाज नहीं कर सका क्योंकि इन दोनों की नौसेनाएँ सुदृढ़ थीं।

इंग्लैण्ड के सम्राट ने व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए हॉकिन्स को तथा उसके बाद सर टॉमस रो को आधिकारिक राजदूत बनाकर भारत भेजा। उसने जहाँगीर से अंग्रेजों के लिए भारत में व्यापार करने की आज्ञा प्राप्त की। जहाँगीर अंग्रेजों के जहाजी बेड़े से पहले से ही प्रभावित था। अतः उसने अंग्रेजों को भारत में व्यापार करने की आज्ञा दे दी। अंग्रेजों द्वारा भारत में ब्रिटिश राज्य स्थापित करने का यह प्रथम चरण था।

जहाँगीर को मदिरा पान की बुरी आदत थी जिससे उसके चरित्र के उत्तम पहलू धीरे-धीरे नष्ट हो गये तथा उसके स्वभाव में असंगति आ गयी जो उसके पतन का कारण बनी। सन् 1627 ई0 में जहाँगीर की मृत्यु हो गयी।

जहाँगीर के काल में नूरजहाँ का प्रभाव

नूरजहाँ का बचपन का नाम मेहरुन्निसा था। उसका पिता गयासबेग तेहरान का निवासी था। उसका विवाह शेर अफ़गन नामक एक ईरानी के साथ हुआ था। उसकी बुद्धि एवं सुन्दरता के कारण उसे जहाँगीर द्वारा नूरजहाँ की उपाधि दी गयी।

नूरजहाँ

जहाँगीर के शासनकाल में नूरजहाँ की भूमिका महत्वपूर्ण थी। नूरजहाँ योग्य महिला थी। उसने राज्य के कार्यों में जहाँगीर को पूरा सहयोग किया एवं बादशाह के व्यसनों पर

नियंत्रण किया। नूरजहाँ बड़ी बलवती और साहसी महिला थी। वह जहाँगीर के साथ शिकार को जाती, शेरों को स्वयं मारती तथा युद्ध में भी सक्रिय योगदान देती थी। वह एक सुशिक्षित तथा सुसंस्कृत महिला थी। कला में उसकी विशेष रुचि थी।

शाहजहाँ (1628-1658ई0)

मुगलों का एक विशाल साम्राज्य था। इतने विशाल साम्राज्य की व्यवस्था के लिए बराबर सजग रहना पड़ता था। विरोधियों के दमन के लिए प्रायः बादशाह या उनके सूबेदार जाया करते थे।शहजादा खुर्रम 1628 ई0 में शाहजहाँ के नाम से आगरा के सिंहासन पर बैठा। शाहजहाँ के राज्याभिषेक के समय बुन्देलखण्ड का शासक जुझार सिंह उनसे मिलने आगरा गया और मित्रता बनाने के अवसर पाकर जुझार ंिसह ने गोंडवाना पर चढ़ाई कर दी। बादशाह ने इस विद्रोह को शीघ्र ही दबा दिया।

दक्षिणी विजय के अभियान के अन्तर्गत सबसे पहले मुगल सेनाओं ने 1633 ई0 में अहमदनगर पर आक्रमण किया और उसे साम्राज्य में मिला लिया। इसके बाद शाहजहाँ के पुत्र औरंगजेब के नेतृत्व में बीजापुर और गोलकुण्डा पर आक्रमण किया। बीजापुर और गोलकुण्डा के सुल्तानों ने आत्मसमर्पण कर मुगलों के साथ शान्ति समझौता कर लिया। बाद में शाहजहाँ ने पुर्तगालियों पर भी विजय प्राप्त कर ली। सन् 1666 ई0 में शाहजहाँ की मृत्यु हो गयी।

शाहजहाँ की उपलब्धि

मुगल स्थापत्य कला हिन्दू एवं मुस्लिम स्थापत्य कला का मिश्रण है। शाहजहाँ की शानो शौकत का प्रमाण उसके द्वारा बनवाई गई इमारतें है। शाहजहाँ ने दिल्ली में एक नए किले

का निर्माण कराया, जिसे 'शाहजहाँनाबाद' कहा गया। यही वर्तमान में दिल्ली का लालकिला कहलाता है।आगरा में यमुना नदी के किनारे ताजमहल, उसने अपनी पत्नी मुमताज महल की मृत्यु पर उसकी स्मृति में बनवाया था। यह सफेद संगमरमर का बना है। प्रेम के प्रतीक के रूप में आज यह पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। ताजमहल विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। पता करके लिखिए कि संसार में और कौन-कौन से आश्चर्य हैं और कहाँ स्थित हैं।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....।

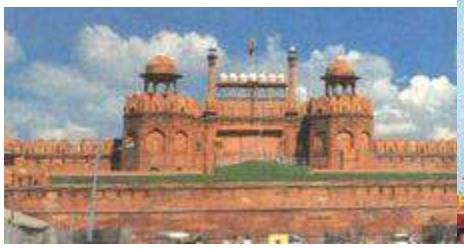

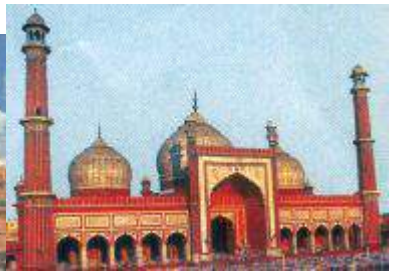

शाहजहाँ अपने मंत्रियों से दीवान-ए-खास में शासन सम्बन्धी मंत्रणा करता था तथा दीवान-ए-आम में राज्य के लोगों से मुलाकात करता था।

उसने दिल्ली के लाल किले में दीवान-ए-आम तथा दीवान-ए-खास बनवाये जो अपनी सुन्दरता में बेजोड़ हैं। शाहजहाँ ने दिल्ली में स्थित जामा मस्जिद भी बनवायी।दीवान-ए-खास में अन्दर कीमती चाँदी की छत थी तथा उसमें संगमरमर, सोने और बहुमूल्य पत्थरों की मिलीजुली सजावट थी। शाहजहाँ ने आगरा में जामा मस्जिद का निर्माण करवाया। आगरा की जामा मस्जिद को मस्जिद-ए-जहाँनामा भी कहा जाता है।बहुमूल्य रत्नों से ज़डित मयूर िसंहासन (तख़्ते ताउस) शाहजहाँ ने बनवाया था। विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर भी इसमें लगवाया गया था। सिंहासन सुनहरे रंग में एक खाट के रूप में था तथा मीनाकारी किए हुए पन्ने के बारह खम्भों पर आधारित था। प्रत्येक स्तम्भ पर रत्नों से जड़े दो मयूर थे। प्रत्येक जोड़े पक्षियों के बीच हीरे, पन्ने, लाल मणियों तथा मोतियों से आच्छादित एक वृक्ष था मयूर सिंहासन को सन् 1739 ई0 में नादिरशाह लूटकर ईरान ले गया।

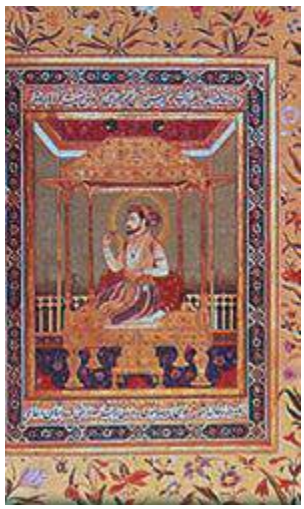

शाहजहाँ मयूर सिंहासन पर बैठे हुए

साहित्य

शाहजहाँ के समय में फारसी, संस्कृत तथा हिन्दी सभी भाषाओं में उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखे गये। उसका पुत्र दारा शिकोह संस्कृत का विद्वान था। उसने उपनिषदों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद किया।

और भी जानिए

अकबर के काल में भवन निर्माण की सामग्री के रूप में लाल बलुआ पत्थर तथा अलंकरण हेतु संगमरमर का प्रयोग होता था।

शाहजहाँ के काल में संगमरमर भवन निर्माण की आधार सामग्री हो गयी। अलंकरण पच्चीकारी के माध्यम से होने लगा। संगमरमर पर रत्नों की जड़ाई को 'पच्चीकारी' कहते हैं।

शब्दावली

मनसबदार - मुगल अधिकारियों को दी जाने वाली पदवी

मकबरा - बादशाहों की कब्र के ऊपर बना स्मारक

पैमाइश - भू-सर्वेक्षण के लिए की जाने वाली भवनों, खेतों, जमीनों आदि का नाप

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) जहाँगीर के बचपन का क्या नाम था ?

(ख) जहाँगीर ने खुर्रम को कौन सी उपाधि प्रदान की और क्यों ?

(ग) सर टॉमस रो कौन था ? वह भारत क्यों आया ?

(घ) शाहजहाँ का काल स्थापत्य निर्माण के लिए याद किया जाता है ? उल्लेख कीजिए।

2. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही और गलत का चिह्न लगाइए-

क. जहाँगीर ने बादशाह तक अपनी फरियाद पहुँचाने के लिए न्याय की जंजीर लटकवाई।

ख. शाहजहाँ के राज्याभिषेक के समय बुन्देलखण्ड का शासक जुझार ंिसंह उनसे मिलने आगरा नहीं गया।

ग. बहुमूल्य रत्नों से जड़ित मयूर सिंहासन को शाहजहाँ ने बनवाया था।

घ. मयूर सिंहासन (तख्ते ताउस) जहाँगीर ने बनवाया था।

प्रोजेक्ट वर्क

अध्यापक की सहायता से अपने जनपद के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण इमारतों, स्थलों का पता लगाइए व उनके बारे में निम्नलिखित बिन्दुओं पर अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए-

- इन इमारतों को किसने बनवाया ?

- इन्हें बनाने में किन चीजों का इस्तेमाल किया गया है ?

- इनकी देख-भाल कौन करता है ?

- यदि आपको ऐसी इमारतों की देख-भाल व सुरक्षा की जिम्मेदारी दी जाए तो आप क्या करेंगे ?